मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh ISSN:2456-2904

सोलेनेसी वर्गीय सब्जियों की पौध कब व कैसे तैयार करे

[1]भगवती बरण्डा, [2]मंजू वर्मा एवम [3]देवा राम मेघवाल
[1]विद्यावाचस्पति शोधार्थी, आनुवांशिकी एवम पादप प्रजनन विभाग, कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर बीकानेर
[2]उद्यानिकी विभाग कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर बीकानेर
[3]नोडल अधिकारी, एग्रीक्लीनिक एन्ड एग्रीबिजनेस सेंटर, कोटा राजस्थान

प्रस्तावनाः–पौधशाला का नर्सरी शब्द अंग्रेजी के नर्स या नर्सिंग से लिया गया है। जिसका अर्थ है पौधों की देखभाल 'पालन पोषण और संरक्षण प्रदान करना। इसलिए पौधशाला या नर्सरी वह सिमित क्षेत्र है जहाँ छोटे एवं महंगे बीजो को सघन रूप से बुवाई कर तथा उगे हुए पोधो की पारम्भिक अवस्था में उचित देखभाल करके पौध तैयार करने को पौधशाला या नर्सरी कहते है।

सब्जी उत्पादक के लिए सब्जियों की पौध तैयार करना अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। जिससे व्यवसायिक खेती के लिए गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री की उपलब्धता का होना जरूरी है। साग सब्जियों की सफल उत्पादन का आधार स्वस्थ बीज एवं उससे तैयार पौध होती है। सालभर उगाई जाने वाली सब्जिया टमाटर, मिर्च एवं बैंगन की नर्सरी तैयार करते समय निम्नांकित उन्नत विधियों को अपनाना चाहिए।

1 पौधशाला के लिए स्थान का चुनावः–

समतल एवं अच्छे जल निकास की व्यवस्था होनी चाहिए । नर्सरी की भूमि उपजाऊ समतल म्रदा का पी एच मान उदासीन हो तथा खरपतवारो व कंकर पत्थर से मुक्त हो साथ ही सूर्य का प्रकाश पर्याप्त उपलब्ध हो। नर्सरी के लिए बीज स्वस्थ शुद्ध अच्छी अंकुरण क्षमता तथा उन्नत किस्म का ही खरीदे।

2 नर्सरी करने की विधि तथा बुवाई का समयः–

नर्सरी के लिए भूमि की 2–3 बार गहरी जुताई करे इसके बाद पाटा चलाकर मिटटी ढेले रहित भुरभुरी हो। अच्छी स्वस्थ पौध उगाने के लिए नर्सरी क्षेत्र में 2–3किलोग्राम प्रति वर्ग मीटर सड़ी गोबर की खाद भूमि में मिलावे ।

बुवाई के समय 500 ग्राम प्रतिक्यारी की दर से नत्रजन फास्फोरस एवं पोटाश मिला देंवे । अब क्यारी की मिटटी को अच्छी तरह से मिलाकर समतल कर दे । एक आदर्श क्यारी का आकार 3 मीटर लंबाई 1 मीटर चौड़ाई एवं 15 सेमी ऊंचाई का होना आवश्यक है । दो क्यारियों के बीच में 50 सेमी जगह छोड़नी चाहिए ताकि निराई –गुड़ाई, सिंचाई कार्य आसानी से हो सके । इसके फलस्वरूप प्रति हेक्टेयर के लिए 15 क्यारियो की जरूरत रहती है।

फसल	बुवाई का समय	बीज की मात्रा हेक्टेयर {ग्राम}
टमाटर	जून–जुलाई	400– 500 ग्राम सामान्य किस्म
	अक्टूबर–नवम्बर	250 ग्राम संकर
बैंगन	जून–जुलाई	400–500 ग्राम सामान्य किस्म
	अक्टूबर–नवम्बर	250 ग्राम संकर
मिर्च	जून–जुलाई	1000 ग्राम सामान्य किस्म

3. बीजोपचार :– नर्सरी में बीजो की बुवाई के उपरांत होने वाली जड़गलन बीमारी से पोधो को बचाने के लिए कैप्टानध्थाइरम 2–3ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित करे । जैविक नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा विरडी 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित करे ।

रासायनिक विधि से उपचार के लिए फार्मलिन 1.5–2.0 प्रतिशत को 1–3 लीटर पानी प्रति वर्ग मीटर से क्यारियों में डाले ।

4:–पौध तैयार करने की विधियाँः–

अ) छिड़काव :– अच्छे अंकुरण हेतु बुवाई की सही विधि छिड़काव विधि है । इस विधि में बीज की गहराई 2 सेमी तक रखते है । इसके उपरांत हल्का पानी देकर घास या अन्य किसी पेड़ के पत्ते जैसे पलाश/सागवान से ढक दे तथा अंकुरण के तुरंत पश्चात् इन्हें हटा दे।

ब) पो–ट्रे में पौध तैयार करना :–नर्सरी में पो ट्रे एक आधुनिक प्रणाली है । पो ट्रे प्लास्टिक की ट्रे होती है । जिसमे संचयनुमा छोटे कक्ष होते है । इन कक्षो में 2–3 बीज डालकर ट्रे को नियंत्रित वातावरण में रखकर पौध

तैयार की जाती है । पो–ट्रे म्रदा रहित माध्यम से भरा जाता है । यह माध्यम वर्मीकम्पोस्ट कोकोपिट व् वर्मीकुलाई का मिश्रण अनुपात 3:1 से भरा होता है।

5 नर्सरी में पोधो का संरक्षण :–

1 सब्जी नर्सरी की क्यारियों में सिंचाई समान रूप से तथा धीरे धीरे फुंहारे से करनी चाहिए जिससे मिटटी नही बहे।

2 सिंचाई के बाद मिटटी में पपड़ी आने पर हल्की गुड़ाई करे जिससे जड़ो में वायुसंचार बढ़ता है व् खरपतवार भी नष्ट होते है।

3 पौधे में लगने वाले कीड़े जैसे माहू, सफेद मक्खी एवं थिर्प्स से बचाने के लिए डाइमिथोइट 30 ईसी 1 मिलीलीटर प्रतिलीटर पानी में मिलाकर पोधो पर छिड़काव करें।

4 टमाटर, बैंगन एवं मिर्च की नर्सरी को जीवाणु जनित उकटा रोग से बचाव के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 100 ppm प्रति लीटर पानी के घोल में जड़ो को 10 मिनट डूबाने के बाद रोपाई करे।

6 पौधरोपणः–सामान्यतः नर्सरी से पोधो को खेत में रोपण के लिए 25–30 दिन बाद, 10–15 सेमी ऊंचाई व् 4–5 पत्तियों की अवस्था में खेत में रोपाई करे।

7 पौधशाला का महत्व :–

- आदर्श पौधशाला से निरन्तर स्वस्थ और प्रमाणित पौध रोपण के लिए उपलब्ध होते है ।
- पौधशाला का क्षेत्र सिमित होने के कारण पौधों की देखभाल अच्छे से व् आसानी से किया जा सकता है ।
- पॉलीहाउस या नेटहाउस में पोधो के अंकुरण व वृद्धि के लिए अनुकूल परिस्थितियों प्रदान की जाती है । इसलिए पर्यावरण की प्रतिकूल परिस्तिथियों में भी पोधो को सफलतापूर्वक तैयार किया जा सकता है।
- पौधशाला में सघन देखभाल सम्भव है जिससे पोधो को समय पर कीट , रोग व खरपतवारो से बचाया जा सकता है।
- विभिन्न सब्जियों की अगेती और पछेती फसल लेकर अच्छा मुनाफा लिया जा सकता है, जो अच्छे पौधे की उपलब्धता के लिए अच्छी पौधशाला ही सम्भव है ।
- सब्जियों के संकर किस्मो के बीज महंगे होने के कारण इन्हे पौधशाला में तैयार करना अधिक उचित होता है ।